कलीसिया में आत्मिक मातृत्व के लिए बाइबिल का आह्वान

> तीतुस *2:3–5 (HNKV):*
>
> “वैसी ही बुढ़ियाओं को भी सिखा कि चालचलन में पवित्र रहें , दोष लगाने वाली न हों , न बहुतेरे दाखरस की दासी हों , पर भली बातों की शिक्षिका हों ; ताकि जवान स्त्रियों को सिखाएँ कि अपने पतियों और अपने बच्चों से प्रेम रखें , संभलकर चलें , पवित्र रहें , घर की रखवाली करें , भली बनें , अपने अपने पति के आधीन रहें , ऐसा न हो कि परमेश्वर का वचन बदनाम हो। ”

 आपकी सेवकाई छोटी नहीं — यह रणनीतिक है

आज कलीसिया में कई समस्याएँ आत्मिक भूमिकाओं की गलत समझ से उत्पन्न होती हैं। हम यह मान लेते हैं कि केवल पास्टर , सुसमाचार प्रचारक या बाइबल शिक्षक ही दूसरों को शिष्य बनाने के लिए बुलाए गए हैं। परन्तु शास्त्र कहता है कि मसीह के शरीर का हर सदस्य परमेश्वर द्वारा ठहराई गई भूमिका रखता है (1 कुरिन्थियों 12:18–21)। जब कोई सदस्य अपनी भूमिका नहीं निभाता , तो पूरा शरीर प्रभावित होता है।

जब परिपक्व स्त्रियाँ युवा स्त्रियों को सिखाने और मार्गदर्शन देने

की अपनी बाइबिलिक जिम्मेदारी को पूरा नहीं करतीं , तो इसके परिणाम स्पष्ट दिखाई देते हैं। बच्चे मसीही घरों में पलते हैं , पर उनमें भय , अनुशासन, और शास्त्र का ज्ञान नहीं होता (व्यवस्थाविवरण 6:6–7)। युवा पत्नियों के पास बाइबिल आधारित स्त्रीत्व का कोई उदाहरण नहीं होता , इसलिए वे संसार के मानकों का अनुसरण करने लगती हैं। जब कलीसिया अपने लोगों को शिष्य नहीं बनाती , तो संसार खुशी से यह काम अपने हाथ में ले लेता है।

 आत्मिक माताएँ : परिपक्व स्त्रियों की भूमिका

प्रेरित पौलुस ने तीतुस —एक युवा कलीसिया नेता —को ऐसी शिक्षाएँ दीं जो आज भी उतनी ही महत्वपूर्ण हैं। उन्होंने विशेष रूप से बड़ी स्त्रियों की भूमिका पर जोर दिया —जो विवाह , मातृत्व और विश्वासयोग्यता के अनुभव से परिपक्व हुई हों।

उनकी बुलाहट यह नहीं कि वे निष्क्रिय , आलोचनात्मक या चुगली में फँसी रहें (1 तीमुथियुस 5:13), बल्कि वे आत्मिक माताएँ बनें :

> - भली बातों की शिक्षिकाएँ
> - भक्ति के आचरण में आदर्श
> - विवाह , पालन-पोषण, शालीनता और पवित्रता में मार्गदर्शक

यही शिष्यत्व है — और यही महान आदेश (मत्ती 28:19–20) का हृदय है। यह केवल मंच से नहीं, बल्कि एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक —स्त्री से स्त्री, माता से बेटी, विश्वासिनी से विश्वासिनी —प्रवाहमान रहता है।

 अगली पीढ़ी को मार्गदर्शन देना

बाइबिल आधारित स्त्रीत्व आज की संस्कृति के विपरीत है। आज की युवा स्त्रियों को ईशभक्ति, सेवा और विनम्रता की तुलना में स्वतंत्रता, सौंदर्य और आत्मनिर्भरता को प्राथमिकता देने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। पर बाइबल मसीही स्त्रियों को बुलाती है:

> - अपने पतियों से प्रेम करने के लिए *(इफिसियों 5:22–24)*
> - अपने बच्चों से प्रेम करने के लिए *(नीतिवचन 22:6)*
> - संयमी और पवित्र होने के लिए *(1 पतरस 3:1–4)*
> - घर की रखवाली करने के लिए *(नीतिवचन 31:10–31)*
> - भली और आधीन बनने के लिए, ताकि परमेश्वर का वचन बदनाम न हो *(तीतुस 2:5)*

जब स्त्रियाँ इन भूमिकाओं को अस्वीकार करती हैं, तो इससे उनके घरों और कलीसिया में भ्रम उत्पन्न होता है — और सुसमाचार की प्रतिष्ठा भी कलंकित होती है। मसीही घर सुसमाचार का जीवित प्रमाण होना चाहिए।

✝ इस बुलाहट की उपेक्षा के परिणाम

> जब परिपक्व स्त्रियाँ अपनी सेवकाई को पूरा नहीं करतीं *:*
>
> - बच्चे बाइबिलिक नींव से वंचित रह जाते हैं
> - विवाह अज्ञान और अहंकार से दुर्बल हो जाते हैं
> - कलीसिया अपनी पीढ़ीगत शक्ति खो देती है
> - और सबसे गंभीर बात — "परमेश्वर का वचन बदनाम होता है" *(तीतुस 2:5)*

इसका अर्थ है कि हमारे जीवन हमारे संदेश के अनुरूप न होने के कारण लोग परमेश्वर के वचन का उपहास करते हैं। जैसा कि पौलुस ने कहा (रोमियों 2:24):
"क्योंकि तुम्हारे कारण अन्यजातियों में परमेश्वर का नाम बदनाम होता है। "

□ आपका प्रतिफल अनन्त है

कभी यह मत सोचिए कि आपकी भूमिका छोटी है। परमेश्वर सेवकाई को मंच के आकार से नहीं , वचन के प्रति आपकी विश्वासयोग्यता से मापता है।

वह स्त्री जो प्रेमपूर्वक युवा स्त्रियों को मार्गदर्शन देती है , अपने बच्चों को प्रभु के भय में पालती है , अपने पति का सम्मान करती है और अपना घर बनाती है — वह भी परमेश्वर के राज्य में उतनी ही मूल्यवान है जितनी वह जो हजारों के सामने प्रचार करती है।

यीशु के वचन स्मरण रखें :

> “अच्छे और विश्वासयोग्य दास , तू थोड़े में विश्वासयोग्य निकला , मैं तुझे बहुतों पर अधिकारी ठहराऊँगा ; अपने स्वामी के सुख में प्रवेश कर। ”
> — मत्ती 25:23

आपका प्रतिफल मान -सम्मान में नहीं , बल्कि आज्ञाकारिता और विश्वासयोग्यता में है — उसी कार्य में जिसे परमेश्वर ने आपको सौंपा है।

 अन्तिम प्रोत्साहन

यदि आप एक परिपक्व स्त्री हैं —चाहे आयु से या अनुभव से —तो यह जानें : आपके पास एक दिव्य बुलाहट है।
आपको अगली पीढ़ी की स्त्रियों को पोषित करने , सिखाने और शिष्य बनाने

परिपक्व स्त्री, अपने सेवकाई को पहचानोकलीसिया में आत्मिक मातृत्व
के लिए बाइबिल का आह्वान

के लिए एक पवित्र सेवकाई सौंपी गई है।

आपका उदाहरण, आपके शब्द, आपका प्रेम, और आपकी सलाह — यह सब परमेश्वर के हाथों में उसके राज्य निर्माण के साधन हैं।

इस बुलाहट को अपनाएँ।
आनंदपूर्वक पूरा करें।
और विश्वास रखें कि प्रभु में आपका श्रम व्यर्थ नहीं है। (1 कुरिन्थियों 15:58)

प्रभु आपको आपकी दिव्य बुलाहट में चलते हुए अत्यन्त आशीष दे। शालोम।

Share on:
WhatsApp

Print this post